माँ का मन | By Kundan Sonkar |

माँ का मन निर्मल ममता की खान है
माँ के मन में ही बसते भगवान हैं
मन शीतल पवित्र गंगा
जल के जैसा
इनकी गाथा सारे जग में महान है

एक माँ और बेटे का है दास्तान सुनिए
सुनके हो जाओगे ऐ दोस्तों हैरान सुनिए
माँ के ही कोख से एक लाल तो हुआ पैदा
था तो बेटा मगर था दोनों आँख से अंधा
बेटे को देख कर माँ फूली नहीं समाई
देखी जो दोनों आँखें तो लगी आने रुलाई
ऐ भगवान क्या कसूर किया था मैंने
क्यूँ मेरे लाडले की आँखें छीन ली तूने
कहते कहते वो बेशुमार है रोने लगी
कैसा इंसाफ है कैसी मुसीबत आन पड़ी
कुछ दिनों बाद एक तरकीब है नजर आई
फौरन ही डॉक्टर से अपनी बात फरमाई

डॉक्टर से कहती है क्या ?
ऐ डॉक्टर बाबू थोड़ी सी दया कीजिए
मेरे लाडले को मेरी आँखें बख्श दीजिए
ये बात सुनकर डॉक्टर बाबू
कुछ देर तक खामोश रहे
बेटे के लिए माँ के दिल में
त्याग का जोश था
देके दोनों आँखें अब माँ तो अंधी हो गई
जिंदगी भर के लिए रोशन दुनिया से खो गई
और बेटे से बोली अब तक दुनिया दिखाई मैं तुझे
बेटे से बोली अब तक दुनिया दिखाई मैं तुझे
अपनी आँखों से बेटा दुनिया दिखाना अब मुझे
दिन महीने साल गुजरे
बेटा अब काबिल हुआ नौकरी के वास्ते
एक दफ्तर में हाजिर हुआ
मिल गई सर्विस
वो दफ्तर घर से कोसों दूर था
माँ से दूर जाने को बेटा तो बस मजबूर था
नौकरी को चल दिया
कुछ तो दया आई नहीं
माँ बिलखती रही
कुछ बोल पाई नहीं
दफ्तर में ही एक सुंदर नाज़मी से मुलाकात हुई
आँखों ही आँखों में ये कैसी गजब सी बात हुई
जाकर कहा वो सुंदरी से
आकर मुझे प्यार कर
मैं अकेला तू अकेली एक हो जाए अगर
ऐसे ही चलने लगा प्यार का एक सिलसिला

प्यार में मशगूल हुए माँ याद आती क्यों भला
प्यार में मशगूल हुए माँ याद आती क्यों भला
प्रेम के बंधन में बंध गए दोनों अब इस तरह
सात फेरे हो गए होती है शादी जिस तरह

माँ का मन निर्मल ममता की खान है
माँ के मन में ही बसते भगवान हैं
मन शीतल पवित्र गंगा
जल के जैसा
इनकी गाथा सारे जग में महान है

माँ का मन निर्मल ममता की खान है
माँ के मन में ही बसते भगवान हैं

बरसों बीत गए अब माँ तो बूढ़ी हो चली
बेटे की याद में माँ के दिल में मची खलबली
राह देखती थी ना खत आया ना कोई खबर
हाय मेरा लाडला गया तो गया किधर
बूढ़ी बेचारी माँ को अब दिखता न कोई रास्ता
लग रहा था लाल से रहा न अब कोई वास्ता
मिलना है बेटे से अंधी माँ ने ठान ली
बस किस तरह वो उसके दफ्तर का पता जान ली

माँ का मन निर्मल ममता की खान है
माँ के मन में ही बसते भगवान हैं
मन शीतल पवित्र गंगा
जल के जैसा
इनकी गाथा सारे जग में महान है

माँ का मन निर्मल ममता की खान है
माँ के मन में ही बसते भगवान हैं

दफ्तर के गेट पे एक संतरी तैनात था
दफ्तर के गेट पे एक संतरी तैनात था
कंधे पे लटका बंदूक उसके पास था
बोली बुढ़िया संतरी से थोड़ा रहम कीजिए
बोली बुढ़िया संतरी से थोड़ा रहम कीजिए
अंदर से मेरे लाडले को आप बुला दीजिए
पूछा संतरी ने तेरे बेटे का नाम क्या है
पूछा संतरी ने तेरे बेटे का नाम क्या है
देखने में कैसा है और करता क्या काम है
गोरा मेरा लाडला है आँखें हैं बड़ी बड़ी
जाओ जाकर बोलो तेरी अंधी माँ आ है खड़ी
संतरी जा कर कहा ऐ साहब कोई आई है
अंधी है वो बूढ़ी माँ आपकी बताई है
बेटा कहा वो संतरी से अंधी कोई मेरी माँ नहीं
बेटा कहा वो संतरी से अंधी कोई मेरी माँ नहीं
अपने लाडले को ढूँढे जा कर वो और कहीं
सारी बातें छुपके सुन ली अपने लाल की
दो कदम वापस मुड़ी बेहोश और बेहाल सी
गिर पड़ी वो रास्ते में और भगवान को प्यारी हो गई

जिंदगी भर के लिए चैन-ओ-अमन से खो गई
घर को चला वो लाडला फुर्सत मिला दफ्तर से जब
घर को चला वो लाडला फुर्सत मिला दफ्तर से जब
रुक गया रास्ते में वो लोगों का देखा भीड़ तब
देख कर बुढ़िया को वो चिल्ला उठा
देख कर बुढ़िया को वो चिल्ला उठा
ऐ मेरी माँ ऐ मेरी माँ
हाथ में है कागज उसके जिसमें है सारी बयान
हाथ में है कागज उसके जिसमें है सारी बयान
मैं नहीं अंधी थी बेटा पैदा हुआ अंधा था तू
देके तुझको दोनों आँखें देख अब मैं अंधी हूँ
देके तुझको दोनों आँखें देख अब मैं अंधी हूँ
माँ और बेटे का ऐ भक्तों
माँ और बेटे का ऐ भक्तों रिश्ता ऐसा मजबूत है
टूट सकता न ये, ये तो बस अटूट है
टूट सकता न ये, ये तो बस अटूट है
माँ के पीछे पागल ये हिंदुस्तान है
माँ के पीछे पागल ये हिंदुस्तान है
माँ के नाम को जप लो भक्तों
माँ के नाम को जप लो भक्तों माँ तो जग की शान है

माँ का मन निर्मल ममता की खान है
माँ के मन में ही बसते भगवान हैं
मन शीतल पवित्र गंगा
जल के जैसा
इनकी गाथा सारे जग में महान है

माँ का मन निर्मल ममता की खान है
माँ के मन में ही बसते भगवान हैं

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%ae%e0%a4%be%e0%a4%81-%e0%a4%95%e0%a4%be-%e0%a4%ae%e0%a4%a8-by-kundan-sonkar/